RNI No. DELHI/2011/38257

हंस प्रकाशनः 2021 में प्रकाशित महत्वपूर्ण पुस्तकें

समसामयिक सृजन

अक्टूबर–नवंबर 2021

यूजीसी केयर लिस्ट में शामिल
अक्टूबर–नवंबर 2021
वर्ष 11, अंक–23

मूल्य–100/-
ISSN NO. 2320-5733

समसामयिक सृजन

समकालीन साहित्य, शिक्षा एवं संस्कृति का संगम

समसामयिक सृजन

साहित्य, शिक्षा और संस्कृति का संगम

संरक्षक
डॉ. प्रभात कुमार

प्रधान संपादक
प्रो. रमा

संपादक
डॉ. महेन्द्र प्रजापति

संपादन सहयोग
रीमा प्रजापति

ले-आउट
स्कोप सर्विसेज, दरियागंज, नई दिल्ली

संपादकीय कार्यालय
मकान नं. 189, ब्लॉक-एच
विकासपुरी, नई दिल्ली-110018

पत्राचार
एफ-114, तृतीय तल, SLF वेद विहार,
नियर: शंकर विहार ऑटो स्टैंड, लोनी
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश-201102

सदस्यता
आजीवन : 5000/-रुपए
संपर्क : 9871907081
वेबसाइट : www.samsamyiksrijan.com
E-mail : samsamyik.srijan@gmail.com

प्रकाशक एवं मुद्रण
हरिन्द्र तिवारी
हंस प्रकाशन, दिल्ली
मो. : 7217610640, 9868561340
ईमेल : hansprakshan88@gmail.com
वेबसाइट : www.hansprakashan.com

विभाजन की त्रासदी और मंटो 7
विजय पालीवाल

प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) का विश्लेषणात्मक अध्ययन 11
डॉ. अजीत कुमार बोहत

स्त्री अस्मिता संघर्ष और राजकमल चौधरी का हिंदी कथा साहित्य 15
अजीत सिंह

आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी की इतिहास-दृष्टि 18
डॉ. अमित सिन्हा

मध्यवर्गीय जीवन और चन्द्रकिरण सौनरेक्सा का कहानी संग्रह 'आधा कमरा' 20
अनिता देवी

छत्तीसगढ़ के आर्थिक विकास में जल संसाधन की भूमिका 23
डॉ. श्रीमती अनीता मेश्राम

राहुल सांकृयायन का यात्रावृत्त साहित्य में वर्णित धार्मिक पक्ष 27
अरूण माधीवाल

सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना के पक्षधर : सुब्रह्मण्य भारतीय 30
डॉ. के. बालराजू

नेतृत्व और सम्प्रेषण का यथार्थ 34
डॉ. कुमार भास्कर

नयी कविता और कुँवर नारायण 37
भावना

आधुनिक दिल्ली हिंदी रंगमंच का स्वरूप 40
डॉ. धर्मेंद्र प्रताप सिंह

स्त्री अस्मिता का मिथक 43
गजेन्द्र पाठक

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में भारत-नेपाल संबंध 45
डॉ. गौरव कुमार शर्मा

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में दलित का सामाजिक-बोध 47
गौतम कुमार खटीक

भारत में राजनीतिक विकास एवं संविधान संशोधन : एक विश्लेषण 50
गोविन्द नैनीवाल

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक तथा स्वत्वधिकारी : *डॉ. महेन्द्र प्रजापति द्वारा एच-ब्लॉक, मकान नं. 189, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से प्रकाशित*

समकालीन हिंदी उपन्यासों में दलित जीवन संघर्ष ('धरती धन न अपना' के वि ेष संदर्भ में) 154
डॉ. नवनाथ गाड़ेकर

कोच्ची मुज़िरिस बिएन्नाले में प्रदर्शित कुछ प्रमुख इंस्टालेशन आर्ट: चतुर्थ संस्करण के विशेष संदर्भ में 156
शिखा सोनकर

जगदीश चंद्र माथुर के एकांकियों में सामाजिक यथार्थ एवं कलात्मकता 160
डॉ. प्रवीणकुमार न. चौगुले

क्षेत्रवाद, राजनीतिक अपराधीकरण, साम्प्रदायिकता और जातिवाद का प्रभाव 163
नीशू

दिल्ली सल्तनत की कानूनी व्यवस्था: एक ऐतिहासिक अध्ययन 166
डॉ. रिनी पुण्डीर

शिक्षा का समावेशीकरण : एक अध्ययन 169
डा.अलका सक्सेना

जनजातीय सांस्कृतिक परम्पराएं : प्रासंगिकता एवं संभावनाएं 171
डा. नरेश सिंह

1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में ''बरेली के मुंशी शोभाराम और खान बहादुर खाँ का योगदान'' 173
कुलदीप गंगवार

हिंदी नाटक में गांधीवाद की अभिव्यक्ति (विशेष संदर्भ-प्रसादोत्तर नाटक) 176
डा. अवधेश कुमार

भारत में महिला शिक्षा एवं इसका महत्त्व 179
बबिता खाती

महादेवी वर्मा के संस्मरणों में मानवीय संवेदना का शैक्षणिक पक्ष 182
अनिल कुमार

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में रूस की स्थिति: एक राजनीतिक विश्लेषण 185
शैलेन्द्र कुमार

शैक्षिक प्रगति और राजनीतिक विमुखता 188
डॉ. संदीप कुमार अत्री

शिक्षा का अधिकार अधिनियम द्वारा अनुसूचित जातियों में सामाजिक समावेशन का अध्ययन 190
अखिलेश कुमार पटेल/डॉ. यतीन्द्र मिश्रा

'परख' उपन्यास के नारी पात्रों का विश्लेषणात्मक अध्ययन 193
सिमरन भारती

वर्तमान युग में तथागत गौतम बुद्ध के विचारों की उपादेयता 195
डॉ. माया शंकर

वैश्विक मंच पर बढ़ता हिन्दी भाषा का प्रभाव 198
डॉ. शशांक कुमार सिंह

मैत्रेयी पुष्पा और नारी अस्मिता के प्रश्न 200
डॉ. ज्योति गौतम

गिरिजा कुमार माथुर के काव्य में वैयक्तिक-प्रेम की अभिव्यक्ति का स्वरूप 3
डॉ. आर.के. पाण्डेय

केशवदास द्वारा रचित रामचन्द्रिका में प्रतिचित्रण का विवेचनात्मक अध्ययन 205
कृपा शंकर

भारत-अफ़ग़ानिस्तान सम्बन्धों का समीक्षात्मक अध्ययन 207
डॉ. पुष्कर पांडे

चन्द्रकिरण सौनरेक्सा की कहानियों में 'माँ' के रूप में नारी : एक दृष्टि 210
डॉ. अखिलेन्द्र प्रताप सिंह

'त्यागपत्र' उपन्यास में सामाजिक रुढ़ियाँ और नारी 213
डॉ. चन्द्रशेखर

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षक एवं शिक्षक शिक्षा 215
डॉ. लाजो पाण्डेय

भारत-संयुक्त राज्य अमेरिका सम्बन्धों के परिवर्तित होते आयाम : एक समीक्षा 217
डॉ. नलिनी लता सचान

डा. बाबासाहब भीमराव अंबेडकर और बुद्धिज्म: नवयान 220
राजीव कुमार पाण्डेय

धर्म की पुनर्व्याख्या करता मधु कांकरिया का उपन्यास 'सेज पर संस्कृत' 223
डॉ. कामना पण्ड्या

मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर योग शिक्षा का प्रभाव 225
डॉ. सरोज राय

प्रतापगढ़ जनपद में कृषिगत विविधता एवं इसके विकास में जल संसाधन की भूमिका 227
कौशलेन्द्र सिंह

भारत में राज्य राजनीति के निर्धारक तत्व 229
डॉ. उपेन्द्र कुमार सिंह

राज्यों की स्वायत्तता के सम्बन्ध में विभिन्न राजनैतिक दलों की मांग — 231
डॉ. शैलेन्द्र नाथ सिंह

भारत में संघवाद के प्रति राजनीतिक दलों के दृष्टिकोण — 233
डॉ. राजेश कुमार सिंह

ग्लोबल गाँव के देवता : असुर जनजातीय विरासत पर भूमण्डलीकरण का दुष्प्रभाव — 236
संजय कुमार सिंह

आजमगढ़ जनपद के प्राथमिक स्तर के अध्यापकों के पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन — 238
रेनू देवी

उदय प्रकाश के साहित्य में युगबोध के भाव एवं कलात्मक आयाम — 241
डॉ. ज्ञानी देवी गुप्ता

किशोरवय विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों का विकास : ईश्वरीय ज्ञान (मुरली) के सन्दर्भ में — 243
रोशनी चन्द्राकर/डॉ.शोभा श्रीवास्तव

नरेन्द्र कोहली के कृष्णकथात्मक उपन्यासों में जीवन मूल्य — 245
डॉ. सन्जू

मुर्दहिया और मणिकर्णिका में बौद्ध चेतना के स्वर — 247
डॉ. रणजीत कुमार

समकालीन राजनीति का जीवंत दस्तावेज : महाभोज — 249
स्नेहा शर्मा

रीति कालीन कवि केशवदास द्वारा रचित रामचन्द्रिका की प्रासंगिकता — 251
सुरेश चन्द्र पाल

उग्र की कहानियों में युगीन चेतना — 253
डॉ. परषोतम कुमार

परदेशी राम वर्मा के 'सूतक' उपन्यास में सामाजिक जागृति — 255
कमल कुमार बोदले/डॉ. अभिनेश सुराना

आधुनिक हिंदी हास्य-व्यंग्य के पुरोधा राधा कृष्ण — 257
प्रमोद कुमार

लोक साहित्य : सम्यक् विश्लेषण — 260
डॉ. लक्ष्मी गुप्ता

'विघटन' उपन्यास में चित्रित प्रमुख नारी पात्रों की संवेदना — 263
मारुती दत्तात्रय नायकू

जनसंचार माध्यम में हिंदी भाषा का योगदान — 266
प्रा. अशोक गोविंदराव उघडे

सुषमा मुनींद्र की कहानियों में अभिव्यक्त अध्यापक वर्ग का चरित्रांकन — 268
कु. अलका ज्ञानेश्वर घोडके

विज्ञापन क्षेत्र में रोजगार के अवसर — 271
डॉ. उत्तम थोरात

हिंदी कहानी में स्त्री चेतना के विविध संदर्भ — 273
श्रीमती सरला माधव

स्त्रीपरक लोकनाट्य 'नकटौरा' में अभिव्यक्त स्त्री अस्मिता के स्वर — 275
डॉ. सरस्वती मिश्र

भारतीय जनतंत्र में मीडिया और विज्ञापनों की भूमिका का एक अध्ययन — 278
डा. योगेन्द्र कुमार पाण्डेय

'तिरस्कृत' में हाशिये का समाज — 280
डॉ. ओम प्रकाश सैनी

जयनंदन की रचनाओं में मजदूर — 4
डॉ. गोपाल प्रसाद

लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका — 285
डॉ. सुनील कुमार

समकालीन हिंदी उपन्यासों में चित्रित साम्प्रदायिकता: ग्रामीण परिवेश के संदर्भ में — 288
शेख उस्मान सत्तारमियाँ

नई राष्ट्रीय शिक्षण नीति में संगीत शिक्षा और संभावनाएं — 291
डॉ. सुरेन्द्र कुमार

हिन्दी साहित्य के दैदीप्यमान सूर्य : रामधारी सिंह 'दिनकर' — 294
डॉ. सुरेन्द्र शर्मा

स्त्री पराधीनता की अंतहीन दासतां-राम रहीम — 297
डॉ. रमेश यादव

भारत में महिला उद्यमिता व चुनौतियां — 299
डा. सुनीता

सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन — 302
आशुतोष कुमार दूबे/ डॉ. (श्रीमती) मधुबाला राय

प्रधानमंत्री जन-धन योजना और उत्तर प्रदेश में वित्तीय समावेशन की चुनौतियों का अध्ययन — 304
डॉ. जय शंकर शुक्ल

ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा के अभाव के कारण — 308
डॉ. दिनेश प्रसाद मिश्र

विकलांग-विमर्श : दशा और दिशा का मनोवैज्ञानिक अवलोकन (पुस्तक समीक्षा) 310
डॉ सीमा रानी/डॉ मीना पाण्डेय

स्वंय प्रकाश के कथा साहित्य में मार्क्सवाद का प्रभाव 315
स्मिता भारती

हिन्दी काव्य में राष्ट्रीयता और माखनलाल चतुर्वेदी 317
डॉ. संजय कुमार मिश्र

हिन्दी शिक्षण का वैश्विक परिदृश्य 319
अजय कुमार

राजनीति, राजनेता और नागार्जुन 321
अमृता रानी

बाल कहानियों की प्रासंगिकता 323
डॉ. अंजु रानी

'एलिस एक्का की कहानियाँ और आदिवासी स्त्री' 325
मो. आज़म शेख

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में आंचलिकत्ता 327
चन्द्रकला मीना/डॉ. प्रदीप कुमार मीना

'ढिबरी टाइट' कहानी संग्रह का समीक्षात्मक अध्ययन 330
दीन दयाल सैनी

भारत में राष्ट्रीय एकीकरण एवं आन्तरिक सुरक्षा संबंधी चुनौतियाँ 333
डॉ. दीपक कुमार अवस्थी/डॉ. मृदुला शर्मा

प्रेमचन्द की कथा दृष्टि शिवप्रसाद सिंह 336
डॉ. अजीत सिंह

साहित्य और पर्यावरण के परिप्रेक्ष्य में 'बांझ घाटी' 338
डॉ. अमित सिंह

'राष्ट्रीय आंदोलन में हिंदी फिल्मों की भूमिका' 340
डॉ. ममता

विश्व राजनीति में पर्यावरण संबंधी चिंताएं एवं समाधान 343
डॉ. मनीष

नई शिक्षा नीति की अवधारणा और चुनौतियाँ 346
डॉ. नंदन कुमार भारती

कल्पना पत्रिका में विदेशी साहित्य 349
डॉ. निकिता जैन

अज्ञेय के कथा साहित्य में चित्रित पात्रों का कथा में महत्त्व- 352
डॉ. रानी बाला गौड़/गरिमा वर्मा

पाकिस्तान की माँग और भारत विभाजन का एक ऐतिहासिक अवलोकन 354
डॉ. प्रशांत कुमार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का समग्र आलोचनात्मक अवलोकन 356
जाहनवी देव

शिक्षातंत्र का बदलता स्वरूप; वैदिक शिक्षा प्रणाली से आरटीई की ओर 358
कनक प्रिया

निबलेट की डायरी:अंग्रेजी प्रशासक की दृष्टि में भारत छोड़ो आन्दोलन 361
डॉ. कुलभूषण मौर्य

देशज आधुनिकता बोध के कवि त्रिलोचन 364
माधवम सिंह

'देहान्तर' नाटक की मूल संवेदना 367
ममता यादव

अस्तित्व को तलाशती शिवमूर्ति की कहानी 'कुच्ची का कानून' 369
मनीष कुमार

मेहरून्निसा परवेज की कहानियों में नारी अस्मिता की खोज 371
नगीना मेहरा

आदिवासी साहित्य में राजनैतिक चेतना के स्वर 373
निर्मला मीना/डॉ. अशोक कुमार मीना

नारी का अन्त: संघर्ष और महादेवी वर्मा 375
पूनम शर्मा/डॉ. अरूण बाला

बिहार के विकास में महिलाओं की भूमिका को सशक्त बनाने के विभिन्न आयाम का एक अध्ययन 377
प्रो. (डॉ.) महबूब आलम

इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता के काव्य-प्रतिमान 380
प्रो. रसाल सिंह/प्रभाकर कुमार

भारत में न्यायिक सक्रियता एवं जनहितवाद के वर्तमान स्वरूप की विवेचना 383
डॉ. राजेश कुमार शर्मा/डॉ. संगीता शर्मा

उपलब्ध प्रारूपों से परे सामाजिक सिद्धांत: एक विमर्श 386
संदीप कुमार

राष्ट्रोन्नयन की वैदिक संकल्पना 389
संगीता अग्रवाल

औद्योगीकरण के दुष्प्रभाव और आदिवासी केन्द्रित हिन्दी उपन्यास 391
डॉ. उमेश कुमार पाण्डेय

19 वीं सदी का आंदोलन और हिन्दी कहानी 394
डॉ. सविता डहेरिया

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में स्त्री-विमर्श 396
डॉ. उमेश चन्द्र

5

'वैश्वीकरण और मीडिया' 399
सोनू रजक

प्रेमचन्द की कहानियों में हाशिए का समाज : स्त्री संदर्भ 402
सुनीता जाट

ऋतुराज के काव्य में युवा मानसिकता का सामाजिक संदर्भ 404
सुरेश कुमार वर्मा

नीति-निर्माण एंव नीति को क्रियान्वयन करने में नौकरशाही की भूमिका एक समीक्षा 406
सूर्य प्रकाश/प्रो. (डॉ. विनय सोरेन)

भक्ति साहित्य के अन्य प्रश्न और देवीशंकर अवस्थी 409
विजय कुमार गुप्ता

भारत की आजादी में दैनिक समाचार पत्रों में प्रकाशित संपादकीय का अध्ययन 412
बिमलेश कुमार

प्रेमचंद का दलित दस्तक 414
डॉ. जियाउर रहमान जाफरी

आयुर्वेद शिक्षण व्यवस्था:औपनिवेशिक संयुक्त प्रांत निवेशिक संयुक्त प्रांत (1900ई.-1941ई.) 416
पूजा/डॉ. सतीश चंद्र सिंह

छत्तीसगढ़ राज्य में कोर-पीडीएस के प्रभाव का एक प्रशासनिक अध्ययन 419
(धमतरी जिले के विशेष संदर्भ में)
डॉ. श्रीमती रीना मजूमदार/डॉ. प्रमोद यादव/ बिसनाथ कुमार

नई शिक्षा नीति 2020: शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण सुधार 424
निलिशा सिंह

राष्ट्रीय आंदोलन के गांधीवादी चरण में महिलाओं की भूमिका 427
डॉ. चन्दन कुमार

बुद्धकालीन विदेह एवं अंगुत्तराप की भूमि पर पूर्व मध्यकाल में बौद्ध धर्म की उपस्थिति एवं उसका स्वरूप : एक पुरातात्त्विक अवलोकन 430
डॉ० अमिय कृष्ण

''नारी मुक्ति का स्वर मुखरित करती आत्मकथाएं'' 433
(विशेष-सन्दर्भ, एक कहानी यह भी, अन्या से अनन्या)
लक्ष्मी गोंड

दार्शनिक चिंतन के आधार पर बहुआयामी व्यक्तित्व रवीन्द्रनाथ टैगोर का शिक्षा दर्शन 436
डॉ0 नीलम श्रीवास्तव

कठोपनिषद के आधार पर नचिकेता का चरित्र चित्रण 439
डॉ. मधु कुमारी

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रादुर्भाव में तात्कालीन संस्थाओं का योगदान : एक विमर्श 441
प्रिया कुमारी/डॉ. अंजना पाठक

ऑनलाइन शिक्षा : एक समालोचनात्मक अध्ययन 443
डॉ. अश्वनी

संत दादूदयाल का 'माया' विषयक चिंतन 446
सुनील कुमार

आदिवासी समाज और विज्ञान एवं तकनीकी 449
कविता वर्मा और अनुज

मैथिलीशरण गुप्त की कविता में अभिव्यक्त भाव-बोध एवं भाषिक चेतना का मूल्यांकन 452
डॉ संजय वर्मा

बुन्देलखण्ड की लोक संस्कृति एवं इतिहास:चन्देल वंश के विशेष संदर्भ में 456
डॉ अरविन्द सिंह गौर

आधी आबादी के समक्ष विभिन्न चुनौतियाँ : वाया मीडिया 460
अर्चना यादव, डॉ. जयपाल मेहरा

भारत की विदेश नीति : सुषमा स्वराज के विशेष सन्दर्भ में ऋतु 463
सुषमा स्वराज

भारत में कोविड-19 के मध्य प्रवास और विपरीत प्रवासन: समस्याएं और चुनौतियां 466
अरुणा परचा

प्रो. मैनेजर पाण्डेय की साहित्य और साहित्येतिहास दृष्टि! 471
लक्ष्मण

भारत में पत्रकारों पर हमले: पत्रकारिता की अभिव्यक्ति की आजादी को खतरा 474
डॉ. परमवीर सिंह

आचार्य अभिनवगुप्त एवं रूपकों में शान्त रस 477
डॉ. सन्दीप कुमार/डॉ. चांदनी

लोक साहित्य : सम्यक् विश्लेषण

डॉ. लक्ष्मी गुप्ता

'सिद्धांत कौमुदी' में 'लोक' शब्द संस्कृत की 'लोक–दर्शने' धातु में 'धञ्' प्रत्यय लगाने पर निष्पन्न हुआ है। 'लोक दर्शने' धातु का अर्थ है 'देखना'। जिसका लट लकार, अन्य पुरुष, एकवचन रूप 'लोकते' है। इस प्रकार 'लोक' शब्द का अर्थ 'देखने वाले' के संदर्भ में प्रयुक्त होता है। अतः वह पूरा परिवेश, जो इस कार्य को करता या देखता है, लोक कहलाता है। आधुनिक काल में 'लोक' शब्द का प्रयोग अनेक रूपों में किया जाता है। यूरोपीय भाषाओं में 'लोक' शब्द का समानार्थी शब्द 'फोक' के रूप में प्रसिद्ध है। सन् 1687 में यूरोपीय विद्वान जॉन अब्रे ने सर्वप्रथम समाज के रीति–रिवाज, रहन–सहन, अंधविश्वास इत्यादि का अध्ययन किया। तत्पश्चात् 1846 ई. में डब्ल्यू. जे. थॉमस ने पहली बार लोक या समाज के लिए 'फोकलोर' शब्द का प्रयोग किया। हिंदी में 'फोक' शब्द से अभिप्राय 'जन', 'ग्राम' या 'लोक' से है। डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल 'लोक' शब्द को परिभाषित करते हुए लिखते हैं कि – "लोक हमारे जीवन का समुद्र है, इसमें भूत, वर्तमान और भविष्य सभी संचित रहते हैं। यह राष्ट्र का अमर स्वरूप है। अर्वाचीन में मानव के लिए लोक सर्वोच्च प्रजापति है। लोक की धात्री पृथ्वी और लोक का व्यक्त रूप मानव, सभी हमारे नए जीवन के आध्यात्म शास्त्र हैं। लोक, पृथ्वी और मानव इसी त्रिलोकी में जीवन का कल्याणात्मक रूप है।"[1] डॉ. सत्येन्द्र का मत है कि लोक मनुष्य समाज का वह अंग है जिसमें आभिजात्य संस्कार नहीं होते और जो एक परंपरा के प्रवाह में जीवित रहता है।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने 'लोक' शब्द की व्यापकता को स्वीकार करते हुए स्पष्ट किया है कि – "लोक शब्द का अर्थ जनपद या ग्राम नहीं बल्कि गाँवों और नगरों में फैली हुई समूची जनता है, जिनके व्यावहारिक ज्ञान का आधार पोथियाँ नहीं है।"[2] डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय के अनुसार – "आधुनिक सभ्यता से दूर अपने प्राकृतिक परिवेश में निवास करने वाली तथा कथित अशिक्षित और असंस्कृत जनता को लोक कहते हैं। जिनका आचार–विचार एवं जीवन परंपरा युक्त विषयों से नियंत्रित होता है।"[3]

हिंदी साहित्य में 'लोक' शब्द का विविध अर्थों में प्रयोग किया गया है। संत काव्य के अंतर्गत यही 'लोक' शब्द कहीं मृत्युलोक व पृथ्वीलोक के रूप में प्रयुक्त हुआ है तो कहीं संसार के रूप में इसका व्यापक प्रयोग किया गया है। कबीरदास लोक को लोक वेद परंपरा में बहता हुआ मानते हैं और सतगुरु को ही उद्धारक कहते हैं। यथा –

"पीछे लागा जाई था, लोक वेद के साथ।
आगे से सतगुरु मिला, दीपक दीया हाथ।।"[4]

संत काव्य में प्रयुक्त यह लोक शब्द जन–साधारण से ही संबद्ध है। जबकि पाश्चात्य विचारधारा के अंतर्गत लोक साहित्य अंग्रेज़ी के Folk Literature का ही शाब्दिक अनुवाद है। जहाँ लोक के लिए Folk शब्द का प्रयोग हुआ है। लेविस स्पेन्स के अनुसार – "Folklore means the study of urvivals of early customs, belifs, narrative and art"

डॉ. भ्रमर के अनुसार – "लोक साहित्य लोकमानस की सहज और स्वाभाविक अभिव्यक्ति है। यह बहुधा अलिखित रहता है और अपनी मौलिक परंपरा से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक आगे बढ़ता रहता है। वह लोक की वाणी में जो कुछ भी कहता है – सुनता है, उसे समूह की वाणी बनाकर और समूह में घुल–मिल कर ही कहता है। संभवतः लोक साहित्य लोक संस्कृति का वास्तविक प्रतिबिंब होता है। अभिजात्य, परिश्कृत या लिखित साहित्य के प्रतिकूल, लोक–साहित्य परिमार्जित भाषा, शास्त्रीय रचना पद्धति और व्याकरणिक नियमों से मुक्त रहता है। लोकभाषा के माध्यम से, लोक चिंता की अकृत्रिम अभिव्यक्ति लोक साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता है।"[5]

लोक–साहित्य की विधाएँ या रूप

(क) लोकगीत

भारत में लोकगीतों की अविरल परंपरा अनादि काल से चली आ रही है। "जब समस्त जनमानस के चेतन–अचेतन रूप में जो भावनाएँ गीतबद्ध होकर अभिव्यक्त होती हैं, उन्हें लोकगीत कहते हैं।"[6] लोकगीत अंग्रेज़ी के 'फाक सांग' का पर्याय है। जो कि जर्मनी के 'वॉल्क' शब्द का मूल रूपांतर है। लोकगीत का रचनाकार अपना व्यक्तित्व लोक को समर्पित कर देता है। इसीलिए इनसाइक्लोपीड़िया ब्रिटानियां में नाम–व्यक्ति हीन रचना को परंपरा के प्रवाह में पड़ने वाला गीत कहा गया है – "A further and very important limiation of falk song must be mentioned, namely that it, survives by purely oral tradition. It is like a farest tree with it's roat deeply buried in the past but which continally puts forth new branches, new leaves, new fruit. Thus a falk song evalves grasually as it passes throught the minds of different men and different generation."[7]

लोकगीतों की अपनी एक लंबी सुदीर्घ परंपरा है। जिसका उद्गम स्रोत गाँवों को माना जाता है। जिस कारण कुछ विद्वान लोकगीत को 'ग्राम गीत' कहकर भी संबोधित करते हैं। इस संदर्भ में पं. राम नरेश त्रिपाठी का कथन है कि – "मैंने लोकगीतों का नामकरण 'ग्राम गीत' से किया है, क्योंकि गीत तो ग्राम की संपत्ति हैं। ग्राम गीत तो शहरों में भी प्रत्येक संस्कार में जातीय त्योहार और सार्वजनिक उत्सवों में गाए जाते हैं।"[8] लोकगीत, लोकसाहित्य का प्रधान अंग है। जिसका उद्भव नगर और ग्राम के संयुक्त साधारण जन के मध्य होता है। किन्हीं अंशों में लोकोन्मुखी प्रवृत्ति का संस्कृत जन भी इस 'लोक' का अंश बन जाता है। अतः ग्राम गीत इस दृष्टि से लोकगीत के ही पूरक हैं। "एक

'ग्राम–गीत' लोकगीत तो हो सकता है किंतु लोकगीत 'ग्राम–गीत' नहीं हो सकता है।"[9] यदि लोक गीतों के वर्गीकरण की बात की जाए तो वह इतनी विविधता लिए हुए हैं कि उन्हें समवेत कर विभाजित करना बहुत कठिन है। इनका विस्तार व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु तक सभी संस्कारों, विशेष अवसरों एवं घटनाओं, ऋतु–परिवर्तनों, समस्त रसों और समस्त जातियों तक फैला हुआ है। किंतु फिर भी लोक साहित्य के विद्वानों ने उन्हें विभाजित करने का प्रयास किया है। डॉ॰ सत्येन्द्र ने लोकगीतों को संस्कार संबंधी, धर्म संबंधी, ऋतु संबंधी गीतों के साथ मेले के गीत, जातिगत गीत, वीरगाथा के गीत, नीति के गीत सहित अनुभव के गीत आदि में विभाजित किया है। जबकि डॉ॰ कृष्णदेव उपाध्याय ने "संस्कारों की दृष्टि से, रसानुभूति की दृष्टि से, क्रियागीत की दृष्टि से, ऋतुओं और व्रतों के क्रम में और विभिन्न जातियों के प्रकार से"[10] लोकगीतों का वर्गीकरण किया है। शरदकालीन लोकगीत का एक उदाहरण दृष्टव्य है–

"बेला फूलै आधी रात,
चमेली भिनसारे हो आली,
सोने के कलशा म धरेऊँ पानी,
सफरऊ मोरे भगवान हो आली।"[11]

(ख) लोकगाथा

लोकगाथा लोक साहित्य की अत्यंत महत्त्वपूर्ण व प्रभावी विधा है। अन्य विधाओं की भाँति लोकगाथा का मूल प्रेरक लोक मानस है। लोकगाथाओं में वह ऊर्जा विद्यमान रहती है, जो लोक समाज को निरंतर जीवंत और सक्रिय बनाए रखती है।

लोकगाथा को अंग्रेज़ी के Balled का हिंदी रूपांतर माना जाता है। मूलतः लैटिन भाषा के Ballare धातु से बना यह शब्द नाचने के अर्थ में प्रयुक्त होता है। एनसाइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटेनिका के अनुसार 'बैलेड' एक ऐसी पद्य–परंपरा है जिसका स्रष्टा अज्ञात हो, जिसमें सामान्य आख्यान हो, ललित कला सौष्ठव रहित सरल मौखिक परंपरा हेतु उपयुक्त हो।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार – "देश भाषा में लिखी वीर रसात्मक लोकगाथाएँ भी साहित्य के भंडार को भरने में सहायक सिद्ध हुई हैं। ये लोकगाथाएँ अपभ्रंश साहित्य से हिंदी में एक अनवरत धारा प्रवाह बनाती प्रतीत होती हैं।"

विश्व की अलग–अलग भाषाओं में लोकगाथा के लिए अलग–अलग शब्द प्रचलित हैं। हिंदी साहित्य के वृहद इतिहास के अनुसार –"रूसी भाषा में यह 'विलीना', स्पेनिश में रोमांश, डेनिस भाषा में वाईज, यूक्रेन में डूमी और सर्वियन में 'पेस्मी' नाम से प्रसिद्ध है। भारतीय भाषाओं में भी लोकगाथा के लिए अनेक शब्द प्रचलित हैं; जैसे – गुजराती में कथागीत, असमिया में मालिता, डोगरी में कारक, मैथिली में लोकगाथा, राजस्थानी में गीतकथा, ब्रज में प्रबंध गीत, मराठी और छत्तीसगढ़ी में पंवाडा, भोजपुरी में मगही व मलयालम में वडक्कन पाट्टकल आदि नामों से लोकगाथा को जाना जाता है।

सामान्यतः लोकगाथा एक विशिष्ट प्रकार का लोककाव्य होता है। जिसकी उत्पत्ति जीवन में घटित क्रियाकलाप से होती है। जो मौखिक रूप से संगीत की लयात्मक टेक के साथ गायी जाती है। उत्तर भारत में आल्हा, पंजाब में राजा रसालू और राजस्थान में पाबूजी की गाथाएँ बड़ी लोकप्रिय हैं। इन लोक गाथाओं की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इनमें कथानक प्रधान होता है। जिस कारण इनमें गीत बहुत लंबे होते हैं और इन लंबी गाथाओं को गायक दल कई रातों तक गाते रहते हैं।

"प्राचीन भारतीय ग्रंथों जैसे वेद, ब्राह्मण ग्रंथों, पुराण आदि में गाथा शब्द संक्षिप्त गेय कथानकों के लिए प्रयुक्त हुआ है। जबकि लोकगाथा एक अलग धारा है, इस व्यावहारिक धारा में गाथा प्रबंध कथानक के लिए प्रयोग में लाया जाता है।"[12]

हिंदी भाषाभाशी क्षेत्रों में उपलब्ध लोकगाथाओं के मूल में आदर्श जीवन मूल्यों की अभिव्यक्ति है। जिनमें अधिकतर नायक वीरता एवं उत्साह की भावना से परिपूर्ण हैं। वे युद्ध में अद्वितीय साहस का परिचय देते हैं। 'आल्हा' नामक लोकगाथा के नायक आल्हा–ऊदल हैं। जो सभी युद्धों में अद्भुत वीरता का प्रदर्शन करते हैं। यथा –

"खट–खट, खट–खट तेगा
चाले अंधाधुंध चलै तलवार
पैदल से तौ पैदल अडि गये
और असवारन मते असवार
+ + +
वीरे आल्हा जब ललकारै
लाला सुनि लै कान लगाइ
बड़े लडैया मोहबे बारे,
जिनकी मारि सही ना जाइ।।"

लोकगाथा नायक शास्त्रीय दृष्टि से किसी विधान का पालन नहीं करता, लेकिन गायन प्रारंभ करने से पूर्व वह देव वंदना अवश्य करता है। इसे कहीं मंगलाचरण तो कहीं सुमिरन कहा जाता है। कुल मिलाकर लोक समाज के अंतर्गत लोकगाथाएँ सांस्कृतिक परंपरा, लोकाचार व विविध पाठ के अनुसार सुनायी व गायी जाती हैं। जो लोक जीवन से संबद्ध होने के कारण हमारी परंपराओं से जुड़ी हैं।

(ग) लोक कथा

लोककथा, लोकसाहित्य की महत्त्वपूर्ण विधा है। जो कि विशिष्ट शैली पर आधारित है। लोककथाएँ प्राचीन परंपराओं को सहेजते हुए विषम परिस्थितियों से संघर्ष करने की प्रेरणा के साथ ही मूल्य आधारित जीवन जीने की प्रेरणा भी प्रेरणा भी प्रदान करती हैं। लोक कथा स्वयं में किसी न किसी अभिप्राय या अवधारणा को समाहित किए रहती हैं। जिसे अंग्रेज़ी में 'मोटिफ' के नाम से संबोधित किया जाता है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने इसी 'मोटिफ' (Motif) के लिए हिंदी में 'कथानक रूढ़ि' के प्रयोग का सुझाव दिया। डॉ॰ वासुदेव शरण अग्रवाल के अनुसार – "अभिप्राय लोककथाओं का अत्यधिक महत्त्वपूर्ण अंग है।" कथानक का मूल तत्त्व अभिप्राय से ही प्रकट होता है। जिस कारण किसी भी लोककथा में इसका विशेष महत्त्व होता है। डॉ॰ सत्यव्रत लोककथा को परिभाषित करते हुए स्पष्ट करते हैं कि – "मानव मन में, जो शाश्वत बाल–भाव समाया रहता है। उसकी भाषा, उसका साहित्य व उसकी भावाभिव्यक्ति ही लोककथा है।"

लोककथाएँ वस्तुतः वे कहानियाँ होती हैं, जो मनुष्य की कथा प्रवृत्ति के साथ चलकर विभिन्न परिवर्तनों के साथ वर्तमान स्वरूप में आती हैं। इन लोककथाओं में लोकमंगल की भावना, मानवीय भावों का वर्णन, सुखांतकारिता, अलौकिकता का बाहुल्य, स्वाभाविक व यथार्थपूर्ण कथ्य के साथ अश्लीलता का अभाव इत्यादि विशेषताएँ निहित रहती हैं। वर्गीकरण की दृष्टि से इन लोककथाओं को मूलतः छः भागों में विभाजित किया जा सकता है – 1. उपदेश कथा, 2. व्रत कथा, 3. प्रेमकथा, 4. मनोरंजन कथा, सामाजिक कथा 6. पौराणिक कथा।

वस्तुतः लोककथाएँ अभिप्रायों पर आधारित होती हैं। एक अभिप्राय पर अनेक लोककथाएँ आधारित हो सकती हैं। इस दृष्टि से इसमें परिव्यक्तावस्था, अजेयत्त्व, दवी यौनत्त्व व आदि–अंतैक्य चार तत्त्व निहित रहते हैं। इन तत्त्वों के आधार पर लोककथाओं के चार रूप पाए जाते हैं – 1. बालकथा, 2. वीरकथा, 3. कामकथा 4. धर्मकथा।

लोककथाएँ लोकविश्वास पर आधारित होती हैं। ये विश्वास लोक में स्वीकृत एवं प्रचलित होते हैं। जिस कारण लोककथाओं के अंतर्गत मानस के सुख–दुःख, रीति–रिवाज़ एवं आस्था व विश्वास की अभिव्यक्ति पाई जाती है।

(घ) लोक नाट्य

"नाटकों के आदि गुरु भरत मुनि का युग नाटकों की उत्पत्ति का काल माना जाता है। आधुनिक नाटकों से पूर्व लोक नाटकों के युग

का आरंभ कब और कैसे हुआ, यह तय करना कठिन है।"[13] उमा आनंद के अनुसार – "क्लासिक माने जाने वाले संस्कृत रंगमंच भरतमुनि के विचारों को पूर्ण करने में असमर्थ हो गए थे, क्योंकि वह संभ्रांत, उच्चवर्गीय राजाओं और उनके कुलीन शिक्षित ब्राह्मणों का होकर रह गया था। वह आम जन का रंगमंच नहीं था। आम जन के यहाँ तो रंगमंच का एक अलग प्रकार विकसित हो रहा था, आम जनता का, लोक का रंगमंच। यही लोक नाट्य है।"

लोकनाट्य, संगीत एवं नृत्य प्रधान पारंपरिक नृत्य है। इसमें नश्त्य, संगीत एवं अभिनय का संतुलित तारतम्य होता है। कीथ के अनुसार – भरतमुनि ने अपनी नाट्यशाला की सामग्री ग्रामीण क्षेत्रों से ली थी। जबकि यूरोपीय इतिहासकार गार्सा–द–तासी ने अपने हिंदी इतिहास ग्रंथ में लोक–प्रहसन का उल्लेख किया है। "लोकनाट्य लोक मान्यताओं, लोक विश्वासों और लोक परंपराओं से युक्त पद्यात्मक–नाट्य लोकरंजन का साधन रहा है।

लोकनाट्य का वैशिष्ट्य इसकी लोकधर्मिता स्वरूप है। लोक से संबंधित अवसरों पर इसका प्रदर्शन होता है। अलग–अलग प्रांतों में इसका अलग–अलग स्वरूप पाया जाता है। दक्षिण भारत में यक्ष गान, गुजरात में कठपुतली व उत्तर भारत में नौटंकी के रूप में यह प्रचलित है। पारपंरिक लोकनाट्य पौराणिक, ऐतिहासिक व किवंदतियों पर आधारित होते थे लेकिन वर्तमान में ये किसी भी विषय पर आधारित होते हैं। साथ ही लोकनाट्य में व्यावसायिकता का गुण आने के कारण वर्तमान में इसमें व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त अभिनेता भी आने लगे हैं।

(ङ) प्रकीर्ण साहित्य

प्रकीर्ण से अभिप्राय फैला या बिखरा हुआ से लिया जाता है। प्रकीर्ण साहित्य के अंतर्गत लोक मानस के गोपनीय भाव, मंत्रवत विचार, प्रहेलिका वश्त्ति एवं कहावत जैसी प्रवृत्तियाँ समाहित रहती हैं। ये लोक सुभाषित, लोकोक्ति, मुहावरे व प्रहेलिका के रूप में पाई जाती हैं। मनुष्य अपने दैनिक जीवन में अनेक अवसरों पर अपने अनुभवों के अनुसार विविध उक्तियों का प्रयोग करता है। ये उक्तियाँ समाज में यत्र–तत्र सर्वत्र मौखिक रूप में रहती है, जिनका संकलन न हो पाने के कारण ये सभी उक्तियाँ प्रकीर्ण साहित्य के अंतर्गत आती हैं। यही प्रकीर्ण साहित्य लोक साहित्य के अंतर्गत आता है।

प्रकीर्ण साहित्य के अंतर्गत लोक सुभाशित का महत्त्वपूर्ण स्थान है। लोक सुभाशित में सौंदर्य–प्रभुविष्णुता, काव्यात्मकता एवं उक्ति वैचित्र्य का प्राधान्य है। जबकि लोकोक्ति, मुहावरे और प्रहेलिका आदि में बौद्धिक चमत्कार एवं विलक्षणता की सृष्टि होती है।

अस्तु, लोक साहित्य की अपनी विस्तृत सुदीर्घ परंपरा है। जहाँ समस्त लोक का ज्ञान, साहस रूप में देशज भाषा के साथ लोक के लिए उपलब्ध रहता है। वास्तव में लोक साहित्य किसी भी स्थान, समाज व देश की उस मेरुदंड के समान है जिस पर उस देश, स्थान या समाज के रीतिरिवाज, परंपराएँ व सिद्धांत अपना जीवंत स्वरूप ग्रहण करते हैं और पीढ़ी–दर–पीढ़ी धरोहर रूप में निरंतर आगे बढ़ते जाते हैं।

संदर्भ सूची :–

1. डॉ. कृष्णमणि चतुर्वेदी 'मैत्रेय' (संपा.) लेख – डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल, लोकगीत परंपरा अजस्र लोक धारा, सरिता लोक सेवा संस्थान, सुल्तानपुर, संस्करण 2011, पृष्ठ–120
2. लोक साहित्य का अध्ययन, जनपद त्रैमासिक अंक 1, पृष्ठ–66
3. डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, लाके साहित्य की भूमिका, हिंदी साहित्य प्रेस, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 1957, पृष्ठ–28
4. ओमप्रकाश शर्मा, हिंदी संत साहित्य की लौकिक पृष्ठभूमि, पृष्ठ– 6
5. डॉ. भ्रमर, हिंदी भक्ति साहित्य में लोकतत्व, पृष्ठ–5
6. डॉ. कुंदन लाल उत्प्रेती, लोक साहित्य के प्रतिमान, भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़, संस्करण–प्रथम, 1971, पृष्ठ–43
7. डॉ. श्रीराम शर्मा, लोक साहित्य : सिद्धांत और प्रयोग, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2, संस्करण प्रथम, 1973, पृष्ठ–39
8. पं. रामनरेश त्रिपाठी, जनपद (त्रैमासिकी), अंक 1, अक्टूबर 1952, पृष्ठ–11
9. डॉ. श्याम परमार, मालवी लोक साहित्य, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, 1969, पृष्ठ–73
10. डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, लोक साहित्य की भूमिका, हिंदी साहित्य प्रेस, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 1957, पृष्ठ–26
11. बघेलखंड में प्रचलित लोकगीत
12. डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, लोक साहित्य की भूमिका, हिंदी साहित्य प्रेस, इलाहाबाद, 1957, पृष्ठ–89
13. डॉ. जय कौशल, हिंदी प्रदेशों का लोक साहित्य, M 21 : लोक नाट्य शैलियाँ : परंपरा और आधुनिकता, ई पी जी पाठशाला, एम. एच. आफ इंडिया

सहायक प्रवक्ता, हिंदी
गुरु नानक गर्ल्स कॉलेज
यमुनानगर (हरियाणा)

□□